शोधकर्त्ता - अनूप निरंजन

शोध-निर्देशक - प्रो. दुर्गा प्रसाद गुप्त

हिन्दी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

शोध का विषय-सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्रवाद के संदर्भ में नवजागरणयुगीन हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन

पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण

19वीं सदी में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार और इसके साथ औपनिवशिक संस्कृति और विचारधारा के प्रचार-प्रसार की प्रतिक्रिया में एक नई लहर उठनी शुरू हुई। बाहरी संस्कृति के इस फैलाव से भारतीयों के लिए यह जरूरी हो गया कि वे आत्मनिरीक्षण करें और अपनी संस्कृति और संस्थाओं की शक्ति और कमजोरियों की छानबीन। यह नवजागरण शेष भारत के नवजागरण से भिन्न प्रकृति का है। यह भिन्नता इसके सामाजिक-आर्थिक आधार और अधिरचना दोनों ही स्तरों पर थी। शेष भारत में विशेषकर औपनिवेशिक प्रान्तों में समाज सुधार की चेतना 19वीं सदी के पूर्वार्ध में विकसित हुई और आन्दोलन का रूप ग्रहण कर लिया।

समाज सुधार की गहरी चेतना से संपन्न होने के बावजूद औपनिवेशिक प्रान्तों के नवजागरण के नायक 1857 में भारतीय जनता के संघर्ष को समझ नहीं सके और पाय: उससे उदासीन रहे। जबकि हिन्दी नवजागरण ने उभर रहे राष्ट्रीय

आन्दोलन की वह क्रान्तिकारी धरातल तैयार की जिस पर 19वीं सदी में दुनिया का एक महान जनान्दोलन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। हिन्दी नवजागरण ने आधुनिक भारत को उसकी राष्ट्र भाषा दी जिससे स्वतंत्रता आन्दोलन को ताकत मिली और भाषा अलगाववाद ने सांप्रदायिकता को जन्म दिया ।

वस्तुतः नवजागरण का मुख्य द्वंद्व हिन्दी-उर्दू विवाद, देश मुक्ति व समाज मुक्ति तथा देश भक्ति और राजभक्ति के बीच है जो आधुनिक भारत के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के प्रयत्नों के बीच चल रहा था। भारत में स्थानीय निकायों की स्थापना के रूप में लोकतांत्रिक संस्थाओं का जन्म हुआ और विश्वविद्यालयों की स्थापना भी हुई। नवजागरण की विचारधारा के विकास का अध्ययन हमें सोचने पर विवश भी करता है कि विचारधारा का सरलीकरण आर उसकी नकारात्मक चीजों पर ध्यान न देना कितना खतरनाक हो सकता है, यह हम अपने नवजागरण से सीख सकते हैं। भारत का विभाजन इसी असावधानी का परिणाम कहा जा सकता है। इस लिये भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे आधुनिक भारत विशेषकर उदार भारतीय समाज की विचारधारा को समझा जा सकेगा।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध 'सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्रवाद के संदर्भ में नवजागरणयुगीन हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन' 1857 के बाद के साहित्यिक-सांस्कृतिक जगत में हुई बदलावों के आलोक में उसकी विशेषताओं के विश्लेषण का विनम्र प्रयास है।

अनूप निरंजन

(शोधार्थी)

जामिआ मिल्लिया इस्लामिया

नई दिल्ली - 110025